व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 21 अंक : 84

जुलाई-सितंबर-2025

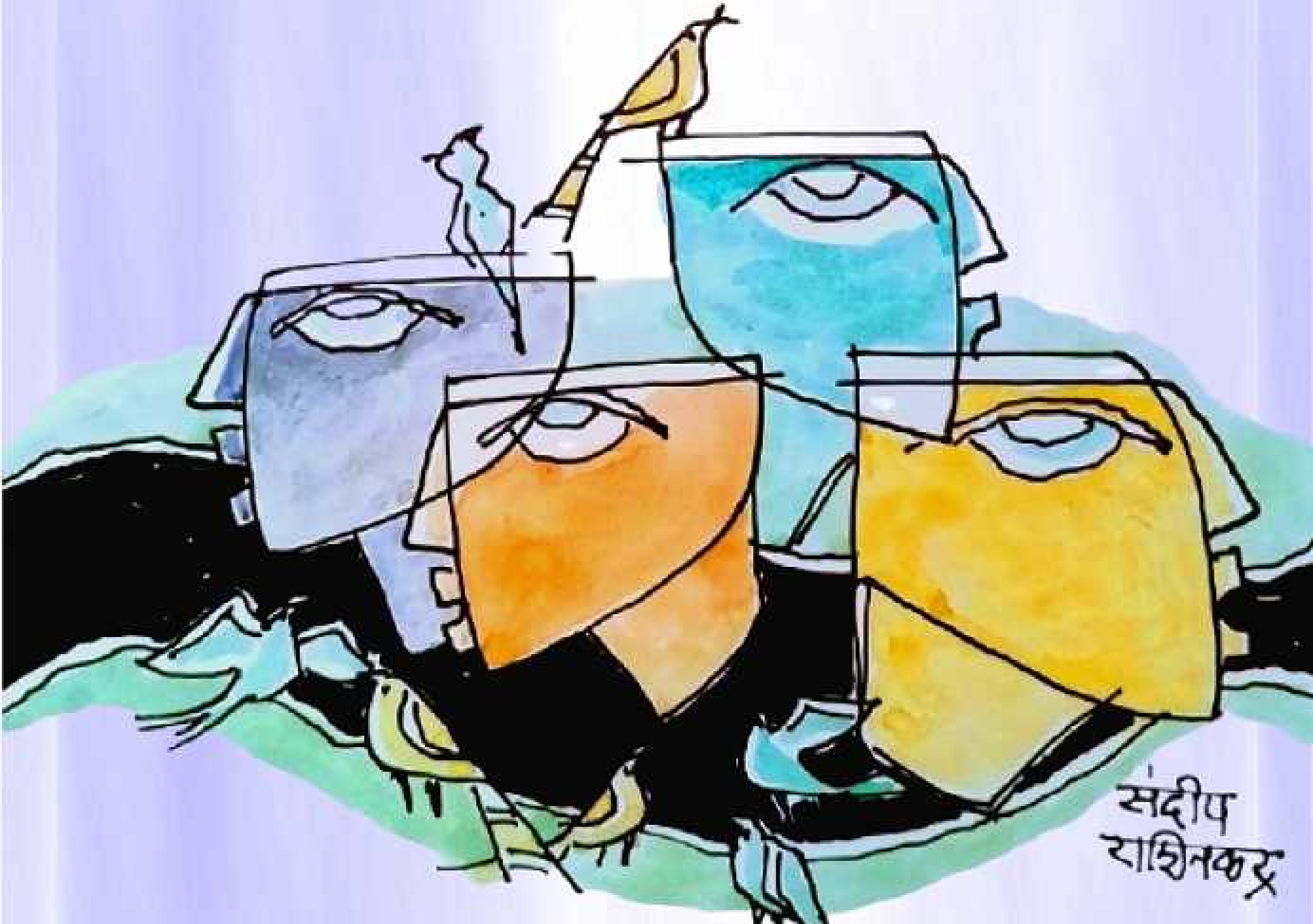

मूल्य ₹ 20

रामदरश मिश्र पद्मश्री से सम्मानित, माधव कौशिक को दोस्तोवस्की स्टार अवार्ड, राकेश शर्मा 'माधवराव सप्रे साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान' से सम्मानित, तेजेंदर शर्मा 'ऑक्सफर्ड यूनियन' में सम्मानित, संध्या नवोदिता को 'शीला सिद्धान्तकर सम्मान'। 'व्यंग्य यात्रा' की हार्दिक बधाई।

वाराणसी में राजेंद्र स्मृति समारोह, 'चित्र नगरी संवाद में' 'आमची मुंबई' पर चर्चा, अद्विक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'एक शाम, आनंद बख्शी के नाम' का त्रिवेणी में लोकार्पण।

'मुंबई में सुनें कहानी 14'। 'हंस' कार्यालय में अजय नावरिया की कहानी पर चर्चा, लीलाधर मंडलोई की 'धरती पर जल', का मुंबई में, तथा 'प्रेम विज की प्रतिनिधि कविताएं' का चंडीगढ़ में लोकार्पण।

रवींद्रनाथ त्यागी स्मृति, धर्मवीर भारती स्मृति एवं व्यंग्य यात्रा सम्मान समारोह की कुछ छवियां

हरीश नवल को 'शीर्ष सम्मान', पंकज सुबीर को 'सोपान सम्मान', बलराम को 'धर्मवीर स्मृति सम्मान', सुभाष चंदर को 'व्यंग्य चिंतक सम्मान' तथा अर्चना चतुर्वेदी को 'शारदा त्यागी स्मृति सम्मान'।

मुख्य अतिथि : ममता कालिया, अध्यक्ष : बालस्वरूप राही, सान्निध्य : प्रेम जनमेजय एवं अरुण महेश्वरी, संचालन : रणविजय राव एवं धन्यवाद ज्ञापन : संजीव कुमार।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

जुलाई–सितंबर 2025

वर्ष–21 **अंक–84**

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
premjanmejai@gmail.com
yatravyangya2004@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित।

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : + 91-9911077754
+ 91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन घिसैं 4-8

संदीप राशिनकर, संतोष श्रीवास्तव, अनुज प्रभात, दिविक रमेश, साधना अग्रवाल, अजय अनुरागी, राजेश ओझा, प्रदीप कुमार, मूसाखान अशान्त बाराबंकवी, शोभा जैन, रश्मि बजाज कबीरन, शशिकला त्रिपाठी, सारिका मुकेश

पाथेय 9-16

शंकर पुणतांबेकर- कमल 9

लतीफ घोंघी- हो जाए इसी बहाने एक श्रद्धांजलि 10

मालती जोशी- हार्ले स्ट्रीट 16

चिंतन 17-34

बी.एल. आच्छा- शरद जोशी के 'अफसर' का अंतर्पाठ 17

सेवाराम त्रिपाठी- हास्य-व्यंग्य : एक पुनर्विचार 19

महेश दर्पण- व्यंग्यकार वनमाली 23

संजीव कुमार- ...समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण 29

समीक्षा तैलंग- व्यंग्य के शीर्षक में... 30

डिम्पल गोयल- परसाई रचनावली भाग-1 का... 33

कबीरी धार की कविता 35-54

सुभाष राय 35

विष्णु नागर- अपने-अपने ईश्वर, हल, बाबूजी... 36

उदयप्रताप सिंह की गजलें 37

विज्ञान व्रत की गजलें 37

यश मालवीय- पूरी नगरी राम हवाले, डेढ़ सौ की दाल... 38

विनोद शाही- आप पहाड़ की चोटी पर हैं 39

रामदरश मिश्र- दवा की तलाश, हाथ तीर्थ यात्री... 40

विजय बहादुर सिंह- 41

राजकुमार कुम्भज- आदेश हैं खौफनाक, बैठकर आग में 41

देवेंद्र कुमार देवेश- 42

राकेश अचल- बेटे से बतरस 42

ओम निश्चल की गजलें 43

कुमार अनुपम- शहर 43

शिवानंद सिंह 'सहयोगी'- छल किया है बहुत, वह... 44

अरविंद तिवारी- गजलें 44

गिरीश पंकज- कुंडलियां 45

शिव नारायण- दोहे 45

अतुल चतुर्वेदी- गजलें 46

अर्जुन चह्वाण और **गुरविंदर बांगा**- गजलें 47

नरेश शांडिलय- दोहे 48

सोमदत्त शर्मा- विविधरंगी दोहे 49

के पी सक्सेना 'दूसरे'- उलटबाँसी दोहे 49

लालित्य ललित- लेखक का लिखना, बेचारा जिन्न,... 50-51

संदीप राशिनकर की गजलें 51

महेश कटारे सुगम, संतोष त्रिवेदी, जसवीर त्यागी 52

शशिकला त्रिपाठी- बाजार में त्यौहार, भारतीय लोकतंत्र 53

रणविजय राव- 'समझदार लोग', 'उड़ती हवा' 54

शुभदा पांडेय- कोहड़े की आत्मव्यथा 54

त्रिकोणीय 55-72

बुलाकी शर्मा का परिचय 55

प्रेम जनमेजय- एक सशक्त पुल 56

बुलाकी शर्मा- अपने लेखन से पूर्णत: संतुष्ट नहीं हूं 57- 59

सुभाष चंदर- बुलाकी जी की शैली... 59

व्यंग्य रचनाएं- मृत्यु पर मनन, स्वप्न कथा 60-62

पूर्ण शर्मा 'पूरण'- मुट्ठी-भर शब्द सैनिक 62

ज्ञान चतुर्वेदी- नैसर्गिक व्यंग्यकार 63

मधु आचार्य 'आशावादी'- सीधे-सादे लेकिन अफलातून लेख 64

नीरज दइया राजस्थानी के परसाई 66-69

सवालों के घेरे में बुलाकी शर्मा 70-72

व्यंग्य रचनाएं 73-118

धर्मेन्द्र निर्मल- हवाई सड़क 73

सुधीर ओखदे- कहानियां मर चुकी हैं 75

अनूप शुक्ल- मानहानि 77

विप्रम- पार्क में पार्किंग की पैमास 78

हरि मृदुल- मिश्र जी से मिलना 80

रामकिशोर उपाध्याय- मौसमी घड़ियाली आँसू 82

विनोद साव- सांस लेने का ढोंग 84

रामदेव धुरंधर- जो शेष था, टोना टोटकी, मुश्किल डगर 85

पुष्पलता- अथ श्री पाठक प्रत्युत्पत्ति कथा 86

रामस्वरूप दीक्षित- पांच लघु व्यंग्य 87

अशोक भाटिया- छह लघु व्यंग्य 88

पंकज शर्मा- चार लघु व्यंग्य 90

श्रीकांत चौधरी- आस्था का हिसाब-किताब, सांप 91

अरविंद विद्रोही- झूठ के मंदिर में सच का प्रवेश 92

सूर्यकांत नागर- सोते रहो 93

रेखा शाह अरबी- परेशान यमराज 94

धर्मपाल महेंद्र जैन- दो दिमाग वाला आदमी 95

सम्राट सुधा- राजनीति के लड्डु... 97

रजनी शर्मा- बस्तरिया ले शपथ! 98

सुभाष नीरव- कबाड़ 99

प्रताप सहगल के व्यंग्य नाटक 'अंधेर में' का अंश 101

स्वाति चौधरी- मूक लेखकों की संसद 103

सुधा कुमारी- स्वतंत्रता की स्वतंत्रता 105

श्रद्धा जलज घाटे- ओम सेहताय नम: 106

सुनील देवधर- जल मग्न 107

मुकेश शर्मा- सर्वश्रेष्ठ अधिकारी 106

ललन चतुर्वेदी- रिटायरमेंट के बाद 109

अखिलेश श्रीवास्तव चमन- वैकल्पिक खाद्य व्यवस्था 110

मुकेश नेमा- कवि दल ने कहा अहो! अहो! 111

विवेक रंजन श्रीवास्तव- डिजिटल थपकी- 'पोक' 112

साकार श्रीवास्तव 'फलक'- मजदूर दिवस मुबारक हो! 112

संदीप अवस्थी- प्रवासी तुम धन्य हो, तुम्हें... 113

विनोद कुमार विक्की- भाईचारा प्रदेश 114

रमेशचंद्र- मैं अपनी परछाई से भयभीत 115

रास बिहारी गौड़- आँखों के नगर का राजा 116

शैलेश शुक्ला- सिविल इंजीनियर देवो भव 117

सुभाष काबरा- आचार्य 118

इधर जो मैंने पढ़ा- 119-140

त्रिकोणीय में 'संत चौक'

प्रेम जनमेजय आज समय की विसंगतियों के विरुद्ध... 119

जवाहर चौधरी आधी हकीकत आधा फसाना 121

अनूप शुक्ल संत चौक मतलब स्टोरी चौक 122

सूर्यकांत नागर सामाजिक संवेदना व्यक्त करती... 123

जयप्रकाश पांडेय- 'साहित्य तक' के बुक कैफे से 125

बालेंदु द्विवेदी का उपन्यास 'बादशाह सलामत हाज़िर हों... 125

मनीषा कुलश्रेष्ठ- घुमक्कड़ी अंग्रेजी साहित्य के गलियारों से 127

अवधेश तिवारी- सतपुड़ा का वनफूल... 128

मधु कांकरिया- काठ के पुतले: मनुष्यता और... 131

इधर प्राप्त कुछ पुस्तकें 132

प्रमोद ताम्बट- एक अलग मुकाम पर... 133

ऋषभ जैन- हैशटैग मीरा अंडरस्कोर कूल 135

अतुल्य खरे- पैने नश्तर से सराबोर... 136

विवेक कुमार मिश्र- ...सामाजिकता की बड़ी कविताएं 137

अर्चना चतुर्वेदी- किताब पर ईमानदार विचार 138

कथांतर, नान्दी, सोच विचार के अंक 139

कृष्ण बिहारी पाठक- 'इनविजिबल इडियट' 140

समाचार 141 -148

आरंभ

20वीं शताब्दी में, विसंगतियों के विरुद्ध, व्यंग्यात्मक विरोध का स्वर राष्ट्रवाद से उत्पन्न है। 'अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी। पै धन विदेश चलि जात, इहै अति ख्वारी।' सत्ता के विरुद्ध विरोध का यह पर कुछ किंतु-परंतु के साथ। आरंभ होता है पर धीरे-धीरे शिव शंभु के चिठ्ठे बनता है। स्वतंत्रता के पश्चात्, विसंगतियों के विरुद्ध, व्यंग्यात्मक विरोध के स्वर का कारण मोहभंग है। इधर देश स्वतंत्र हुआ और उधर उससे मोहभंग होना भी आरंभ हुआ। इक्कीसवीं शताब्दी में व्यंग्यात्मक विरोध का आधार बाज़ारवाद, आभासित दुनिया आदि से उपजी विसंगतियां हैं। 1995 के भारत और इक्कीसवीं शताब्दी के भारत में जमीन आसमान का अंतर हैं। तब 2जी की शुरुआत हुई थी। आज 5जी का समय है। 26 सितंबर 2006 में व्हाटसएप अगस्त 2009 में आया पर प्रयोग में 2010 आना शुरु हुआ यूटयूब 2008 में आया। दुनिया जैसे मुठ्ठी में सिमट गई। मनुष्य ने भी स्वयं को मृट्ठी बंद कर लिया। व्यक्तिवाद हावी होने लगा। आज व्यक्ति जितना सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं उतना मोहल्ले या परिवार में नहीं। अब तो ए.आई. अर्थात आर्टिफिशियल का समय है। अब तो आप बिना परसाई हुए परसाई की तरह लिख सकते हैं। हो सकता है उससे भी अच्छा लिखें। साहित्य के विषय और अपने समय को देखने की दृष्टि बदल रही है। अनेक विसंगतियां जन्म ले रही हैं। आज मानवीय संबंध, शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य आदि तक वस्तु बनते जा रहे हैं। जैसे बाजार में डालर, रुपया, येन आदि मुद्राओं का मूल्यन अवमूल्यन होता रहता है वैसे ही आम भारतीय नागरिक की 'मुद्रा' का मूल्यन अवमूल्यन हो रहा है। आज आत्ममंथन का समय है। अपनी खैर मनाने का समय है। यह हताशा बैठने का समय नहीं चुनौतियों से मुठभेड़ करने का समय है। इनके विरुद्ध निरंतर एक लड़ाई लड़ने का समय है। ऐसी ही चिंताओं को लेकर मैंनें पत्रिका के अंक 81 के संपादकीय में मैंने लिखा था, 'व्यंग्य एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने शिशु कदमों के साथ प्रवेश करने वाली पीढ़ी आज बुजुर्ग हो गई है। इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभ में व्यंग्य लेखन में कदम रखने वाला शिशु व्यंग्यकार आज युवा हो गया है। यह पीढ़ी अपने समय में, डिजिटल प्रभावों के कारण, तेजी से बदलते समय की विसंगतियों से मुठभेड़ कर रही है। जो अग्रज पीढ़ी अपने समय के युवा स्वर को नहीं पहचानती है, उसे स्पेस नहीं देती है वह दंभी है और अपने समय के साथ न्याय नहीं करती है। आवश्यक है कि इस संक्रमण काल में हिंदी व्यंग्य की पुर्नपहचान की जाए।' इसी लक्ष्य को लक्षित करते हुए, निकट भविष्य में, 'व्यंग्य के संक्रमण काल' पर एक दिवसीय संगोष्ठी की संभावना का ने पुर्नजन्म लिया है।

'व्यंग्य के संक्रमण काल' पर 'साहित्य अकादेमी' में एक दिवसीय संगोष्ठी

'साहित्य अकादेमी' और 'व्यंग्य यात्रा' के संयुक्त तत्वावधान में 'व्यंग्य का संक्रमण काल' विषय पर, सिंतबर/अक्टूबर में एक दिवसीय संगोष्ठी होना निश्चित-सा हो गया है। हिंदी व्यंग्य को व्यापक आधारभूमि देने के लिए इस आयोजन में विभिन्न पीढ़ियों एवं विधाओं के व्यंग्य चेतना सम्पन्न आलोचकों, रचनाकारों आदि की सहभागिता रहेगी। संगोष्ठी में- इक्कीसवीं सदी में दस्तक : परिदृश्य और चुनौतिया, साहित्य में व्यंग्य की जबान, एआई की दुनिया और साहित्य, प्रतिरोध का स्वर कितना मुखर, व्यंग्य कविता की धार, आलोचना के रेगिस्तान में कुछ ओसकण, प्रवासी साहित्य और व्यंग्य, व्यंग्य नाटक आदि विषयों पर चर्चा हागी। व्यंग्य रचना पाठ भी होगा।

श्रीलाल शुक्ल एवं धर्मवीर भारती जन्मशति वर्ष आयेजनों का ठंडापन

गत वर्ष, कुछ अधिक धूमधाम से, हरिशंकर परसाई की जन्मशति मनाई गई। सौ के लगभग भासित और आभासित आयोजन हुए। पूरे वर्ष व्यंग्य और व्यंग्यकार भी सक्रिय रहे। अच्छा लगा कि इसी बहाने, व्यंग्य को अब भी शूद्र मानने वालों ने भी व्यंग्य-चर्चा की। व्यंग्य के अनेक कोण सामने आए।

पर अच्छा नहीं लग रहा है कि 'राग दरबारी' जैसा व्यंग्य विधा का क्लासिक रचने वाले श्रीलाल शुक्ल के जन्मशति वर्ष में उन पर चर्चा का लगभग ठंडापन-सा है। एक दो रस्म आदायगी जैसे आयोजन हुए हैं। 'व्यंग्य यात्रा' नवंबर में एक दिवसीय आयोजन की योजना बना रही है।

कुछ इसी तरह का ठंडापन धर्मवीर भारती जी को लेकर लगा। रस्म अदायगी से एक दो आयोजन हुए। इनमें भारती जी के साहित्य पर चर्चा कम अवसर का सदुपयोग अधिक था। भारती जी की स्मृति को अक्षुण रखने के लिए 'व्यंग्य यात्रा' ने इस वर्ष से, पुष्पा भारती जी के सहयोग से, 'धर्मवीर भारती स्मृति सम्मान' आंरभ किया है। यह सम्मान व्यंग्य और पत्रकारिता में सक्रिय रचनाधर्मी को दिया जाएगा। पहला सम्मान बलराम को, 5 अप्रैल के दिन दिल्ली में आयोजित 'व्यंग्य यात्रा सम्मान समारोह में दिया गया।

'इधर जो मैंने पढ़ा' में दो नए स्तंभ 'द्विकोणीय' और 'जय प्रकाश पांडेय के बुक कैफे' से

'व्यंग्य यात्रा' इस अंक से 'द्विकोणीय' स्तंभ के अंतर्गत, किसी एक व्यंग्य कृति पर, दो समीक्षाओं का कोण आरंभ कर रही है। एक कोण संपादक का होगा। कृति लिखने के पीछे लेखक की ऊहापोह होगी एवं दो समीक्षक कृति पर अपनी बात कहेंगे। 'द्विकोणीय' का आरंभ जवाहर चौधरी के व्यंग्य उपन्यास 'संत चौक' से कर रहे हैं। 'द्विकोणीय' क्यों? पत्रिका में जब 'त्रिकोणीय' हो सकता है तो 'द्विकोणीय' क्यों नहीं?

इक्कीसवीं सदी में प्रवेश के साथ ही साहित्य लेखन, प्रकाशन और अध्ययन की दुनिया बहुत बदल गई है। साहित्य धीरे-धीरे सुंदर वस्तु बन गया है। उसे बेचने, बिकवाने, सम्मानित करवाने आदि के खेल के लिए उसे मॉल संस्कृति का हिस्सा बनाया जा रहा है। फेस्टीवलों के आयोजन ने लेखकों के उच्च, मध्यम, निम्न वर्ग आदि तैयार किए हैं। आम आदमी की चिंता और उस पर बात करने वालों का अभिजात वर्ग का छद्म चेहरा शतरंजी चालें चल रहा है। विचारधाराएं गुटों में सीमित हो गई हैं। साहित्य की श्रेष्ठता के मापदंड गुटीय हो गए हैं।

लिखा बहुत जा रहा है। छप भी बहुत रहा है। लिखने और छपने की चिंताएं प्राथमिक हैं। कैसा लिख जा रहा है, यह चिंता, कम से कम व्यंग्य में, नगण्य है। बहुत आवश्यक है कि लिखे पर चर्चा (प्रायोजित नहीं) हो। 'साहित्य तक' के 'बुक कैफे' में जय प्रकाश पांडेय यह श्रम कर रहे हैं। अतुल

चतुर्वेदी, शिवना प्रकाशन के भी कुछ यू ट्यूब चैनल इस अभाव को पाट रहे हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा या परिचय का स्तंभ रहता है। पर ये चर्चाएं व्यंग्य विधा पर कम अन्य विधाओं पर अधिक हैं।

समीक्षा के क्षेत्र में भी व्यंग्य उपेक्षित क्यों हैं? क्यों व्यंग्य पुस्तकों पर चर्चा का एक सीमित दायरा है? क्यों केवल बहुत कम पुस्तकें इस दायरे को तोड़ पाती हैं? इसका कारण तो होगा ही क्योंकि ईश्वर तक ने अकारण अवतार नहीं लिया। बहुत बड़ा कारण आत्मुग्धता है। व्यंग्य बिक रहा है। व्यंग्य छप रहा है। व्यंग्य जल्द पहचान दिला रहा है अत: 'सच्चे व्यंग्यकार' के लिए जरूरी हो जाता है कि वह व्यंग्य रचना का, कैसा और कितना भी, उत्पादन करे। लेखकीय श्रम की बूंद-बूंद से अपनी गागर भरने में यकीन कम है, रचनाओं की बाढ़ से पाठक को त्राहि माम की दशा में छोड़ने का प्रयास अधिक।

'व्यंग्य यात्रा' का प्रयत्न रहा है कि वह हिंदी व्यंग्य के उजाले प्रकाशित को करने के साथ-साथ अंधेरे कोनों में भी झांकें। व्यंग्य चिंतन के साथ इधर लिखे जा रहे व्यंग्य को तो प्रकाशित करे ही, कैसा लिखा जा रहा है इस चिंतन की भी जमीन दे। कौन कैसा और क्यों लिख रहा है, विभिन्न कोणों से इस पर चर्चा हो। इसी कारण पत्रिका के जन्म से ही 'त्रिकोणीय' नामक स्तंभ आरंभ किया गया। इसके अंतर्गत वर्तमान में व्यंग्य रचना कर्म में संलग्न व्यंग्यकारों के लेखन और व्यक्तित्व को विभिन्न कोणों से देखा गया। यही नहीं यदि चर्चा योग्य किसी कृति की भी 'त्रिकोणीय' में चर्चा हुई। पर मैंने पाया कि पत्रिका के त्रैमासिक तथा कुछ अंक संयुक्तांक तथा विशेषांक होने के कारण अनेक महत्वपूर्ण व्यंग्य कृतियां उपेक्षा का शिकार हो रही हैं। व्यंग्य कृति पर विस्तृत बहस या चर्चा का मंच बनने का दायित्व 'व्यंग्य यात्रा' को उठाना ही होगा।

साहित्य तक के 'बुक कैफे' में जय प्रकाश पांडेय पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने का श्रम कर रहे हैं। जय प्रकाश पांडेय बिना किसी भेदभाव के चर्चा करते हैं। वे किताब पर सतही नहीं कहते। किताब को पढ़कर टिप्पणी करते हैं। खुराफाती संपादक के मन में विचार आया कि क्यों न केवल यूट्यूब पर उपल्बध पुस्तक चर्चा को 'व्यंग्य यात्रा' का हिस्सा बनाया जाए? मैंने जय प्रकाश पांडेय भाई को फोन किया। मंतव्य बताया। सामग्री 'साहित्य तक' की है। तकनीकी दिक्कते आ सकती हैं। कुछ दिन बाद उन्होंने संदेश भेजा, 'अग्रज, सादर अभिनन्दन! मेरी आत्मिक इच्छा के बावजूद संकट एक ही है। चूंकि मैं बिना लिखे किताबों पर बोलता हूं, इसलिए उसे ट्रांसक्राइब कौन करे? हमारे कार्यालय में कोई है नहीं, अन्यथा यह आजतक की वेबसाइट पर भी जा पाता। आप ही बताइए फिर कैसे 'व्यंग्य यात्रा' में सदाशयता के अतिरिक्त मेरा प्रतिभाग हो।' अच्छी सामग्री प्राप्त करने के लिए साधन जुटाना संपादक का दायत्वि है। इसार्थ मैंने डॉ. डिंपल गोयल से संपर्क किया। उसे लगा जैसे बिन मांगे मोती मिल गए। जय प्रकाश पांडेय ने चार वीडियो भेज दिए। इस अंक में बालेंदु द्विवेदी के व्यंग्य उपन्यास 'बादशाह सलामत हाज़िर हों...' और मनीषा कुलश्रेष्ठ के 'घुमक्क्ड़ी अंग्रेजी साहित्य के गलियारों से' को ले रहे हैं।

भिक्षाम् देहि, आभार

श्रीकांत चौधरी, संजीव कुमार, राजेंद्र वर्मा, सूरज प्रकाश, राजेश कुमार, रामेश्वर कांबोज, दीनदयाल मुरारका और नवीन चतुर्वेदी का 'व्यंग्य यात्रा' को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करने के लिए आभार।

गोपाल चतुर्वेदी का यूं जाना

अंक प्रेस में जाने को तैयार था कि 25 जुलाई की सुबह दुखद सूचना मिली- गोपाल चतुर्वेदी नहीं रहे। व्यंग्य जगत सदमें आ गया। 'व्यंग्य झरोखे का सजग दृष्टा' चला गया। सप्ताह पूर्व समाचार मिला था कि उनकी पत्नी निशा चतुर्वेदी नहीं रहीं। 19 जुलाई की सुबह, साढ़े आठ बजे के लगभग, शोक प्रकट करने के लिए फोन किया था। वे बोले, 'देखिए, बरसों का साथ छोड़कर चली गईं। अकेले रहने की आदत नहीं है...अब ये जिंदगी अकेले कैसे कटेगी, प्रेम जी...।' लगभग पांच मिनट पुरानी स्मृतियों में डूबकर बात करते रहे। उन्हें सांतवना देने के जैसे मेरे पास शब्द नहीं थे। 'व्यंग्य यात्रा' ने जुलाई-सितंबर 2017 में उन पर केंद्रित अंक प्रकाशित किया था जो बाद में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। 'व्यंग्य यात्रा' परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

व्यंग्य यात्रा शुभचिंतक सहयात्रियों का जाना एक अपूर्णीय क्षति 'व्यंग्य यात्रा' की विनम्र श्रद्धांजलि

डॉ. निर्मला जैन
अपनी राह की अन्वेषक

डॉ. कमल किशोर गोयनका
हिंदी साहित्य के श्रमिक रचनाधर्मी

लोकप्रिय कवियत्री पुष्पा राही

अजित राय
प्रखर पत्रकार एवं फिल्म समीक्षक

सजग रचनाधर्मी केवल गोस्वामी

सजग रचनाधर्मी अखिलेश बार्चे